कोरोनाशॉक और लैटिन अमेरिका

डोजियर नं. 30
ट्राईकॉन्टिनेंटल: सामाजिक शोध संस्थान
जुलाई 2020

(कवर फोटो)

जड़ी बूटी और मसाला विक्रेता (महामारी के बावजूद)।

सांता क्रूज स्ट्रीट, ला पाज, बोलीविया, 2020।
कार्लोस फेंगू

कोरोनाशॉक और लैटिन अमेरिका

गहराता सामाजिक संकट, विफल होता नवउदारवाद और जनता के विकल्प

डोजियर नं. 30
ट्राईकॉन्टिनेंटल: सामाजिक शोध संस्थान
जुलाई 2020

COVID–19 के शुरुआती मामले दिसंबर 2019 में वुहान (चीन) में सामने आए। मार्च की शुरुआत में, विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने तेजी से फैल रही इस बीमारी को महामारी घोषित कर दिया। अब जून के अंत तक दुनिया भर में नब्बे लाख से अधिक लोग इससे संक्रमित हो चुके हैं। जाहिर है कि विश्व व्यवस्था पर महामारी का प्रभाव सार्वजनिक स्वास्थ्य क्षेत्र के दायरे से बहुत आगे तक चला गया है। वास्तव में, सामाजिक जीवन ही पुन:संयोजित हो रहा है। नवउदारवादी पूँजीवाद का संकट तेज होता जा रहा है, उसके साथ ही वैकल्पिक विश्व व्यवस्था बनाने के लिए मौजूदा व्यवस्था में तत्काल परिवर्तन करने की आवश्यकता भी बढ़ती जा रही है (इस पर अधिक जानकारी के लिए, हमारे डॉसियर संख्या 28, कोरोना आपदा: वायरस और दुनिया, और कोरोनाशॉक पर हमारा अध्ययन पढ़ें)। लैटिन अमेरिका में, बीमारी का पहला मामला फरवरी के अंत में पता चला था। अब चार महीने बाद, जून के अंत तक, लैटिन अमेरिका में संक्रमित मामलों की संख्या दुनिया भर में संक्रमित मामलों की संख्या का तेईस प्रतिशत से अधिक हो गया है और हर दिन बीस लोगों की मौत के साथ तेजी से फैलते जा रहे वायरस ने इस क्षेत्र (विशेष रूप से दक्षिण अमेरिका) को महामारी के नये वैश्विक केंद्र में बदल दिया है।

महामारी ने –अप्रत्याशित रूप से– पहले से चल रही आर्थिक और सामाजिक प्रक्रियाओं को तेज कर दिया है। पूँजीवाद की घटती वैधता और लगातार बढ़ते जा रहे नवउदारवादी सुधारों ने इन नीतियों और अमेरिका के नेतृत्व में होने वाले साम्राज्यवादी आक्रमण को सवालों के घेरे में खड़ा कर दिया है (इस पर अधिक जानकारी के लिए, हमारी रिपोर्ट संख्या 6, From 8M to the Coronavirus Crisis पढ़ें)। वायरस के विस्तार ने दशकों से अपनाई जा रही नवउदारवादी नीतियों के परिणामस्वरूप सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र को तबाह करने तथा उसके निजीकरण के साथ–साथ श्रम की बढ़ती अनिश्चितता और लोगों के जीवन स्तर तथा जीवन जीने की बेहद खराब परिस्थितियों को भी उजागर किया है। महामारी ने स्वास्थ्य और सामाजिक संकटों से प्रभावी तौर पर निपटने में नवउदारवादी नीतियों की विफलता का सटीक प्रदर्शन किया है। वर्तमान स्थिति ने जन–आंदोलनों और उनके द्वारा निर्मित किए जा रहे विकल्पों के प्रभावों, कार्रवाइयों तथा उनके द्वारा पेश की जाने वाली चुनौतियों पर भी सवाल खड़े किए हैं।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा राष्ट्रपति निकोलस मादुरो के जेल में डालने के धमकी बाद वेनेजुएला के काराकास, में विरोध, 28 मार्च 2020 यूनाइटेड सोशलिस्ट पार्टी ऑफ वेनेजुएला / फोटोज पुब्लिकस

यह संकट प्राकृतिक नहीं है

वायरस से संक्रमित होने और मरने वालों की संख्या मई 2020 से तेजी से बढ़ने लगी। ये बढ़ती संख्या, क्षेत्र की स्वास्थ्य प्रणालियों के ध्वस्त होने का कारण बन सकती हैं, लेकिन ये संख्या स्पष्ट रूप से दिखाती है कि गरीबों और श्रमिक वर्ग पर इस संकट का असमान प्रभाव पड़ा है। ऐसा ब्राजील, चिली, पेरू, पनामा, डोमिनिकन गणराज्य, इक्वाडोर, और बोलीविया में विशेष रूप से दिखाई देता है, जहाँ संक्रमित लोगों की संख्या (कुछ इलाकों में तो बहुत जल्दी ही) 2,000 प्रति दस लाख को पार कर गई है। मई के अंत तक, ब्राजील दुखद रूप से इतने बड़े पैमान पर संक्रमित होने वाले दुनिया के पहले देशों में से एक बन गया। जून के अंत तक, यह संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद दूसरी सबसे अधिक मौतों और संक्रमित व्यक्तियों वाला देश बन गया। इसी के साथ, डोमिनिकन गणराज्य से हैती की ओर हो रहे पलायन के कारण संक्रमण काफी तेजी से फैल रहा है और मानवीय त्रासदी की ओर बढ़ रहा है।

यह कोई प्राकृतिक अभिशाप नहीं है। महामारी का आना जैविक रूप से पूर्व निर्धारित नहीं था। इसका उद्भव –जैसा कि उन सभी महामारियों के साथ हुआ है, जो हमने इक्कीसवीं सदी के दौरान अनुभव किया है– भोजन के औद्योगिक उत्पादन और जंगलों के विनाश से जुड़ा है, जो नवउदारवादी पूँजीवाद की विशेषता है। इसके अलावा, महामारी का स्वास्थ्य और मानवीय संकट में परिवर्तन, सार्वजनिक नीतियों और सरकारों के दृष्टिकोण के साथ–साथ अन्य सामाजिक, संस्थागत और उन ऐतिहासिक संसाधनों से जुड़ा हुआ है जिन्हें लोग अहम मानते हैं।

लैटिन अमेरिका के मामले में, COVID–19 ऐसे समय में उभरा जब लोग पहले से ही नवउदारवादी नीतियों की लहर पर सवाल उठा रहे थे, जो संरचनात्मक समायोजन, निजीकरण और अन्य प्रतिगामी सुधारों के रूप में 2015 से इस क्षेत्र में चल रही है। 2000 के दशक के दौरान इस क्षेत्र के कई देशों में प्रगतिशील सरकारों की हार के बाद, पिछले कुछ वर्षों से अधिकांश देशों के सार्वजनिक स्वास्थ्य बजट में कटौती की गई। इन नीतियों के परिणामस्वरूप गरीबी, अनिश्चितता, और गैर–बराबरी बढ़ने के साथ सार्वजनिक स्वास्थ्य

प्रणालियों का विघटन हुआ है। उदाहरण के लिए, अर्जेंटीना में स्वास्थ्य मंत्रालय को पहले सामाजिक स्वास्थ्य मंत्रालय के साथ जोड़ दिया गया और फिर 2018 में एक सचिवालय में तब्दील कर दिया गया। यह बदलाव अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के द्वारा लगाई गई संरचनात्मक समायोजन प्रक्रिया का हिस्सा था, जो कि IMF और पूर्व राष्ट्रपति मौरिसिओ मैक्रि के बीच हुए समझौते के बाद शुरू हुई थी। नवउदारवादी नीतियों की ऐसी लहरें 1970 के दशक से लैटिन अमेरिका के सामने आती रहीं हैं, और जो कभी भी हानिकारक सामाजिक परिणामों की शुरुआत करने में विफल नहीं हुईं।

इसलिए, वर्तमान संकट कोई पृथक या असंगत घटना नहीं है। बल्कि, यह दशकों से अपनाई जा रही विनाशकारी नवउदारवादी नीतियों से ही उपजा है और नवउदारवाद की विफलता और स्वास्थ्य संकट से निपटने में इसकी असमर्थता पर प्रकाश डालता है जोकि इसके ढाँचे में ही अंतर्निहित है। इस संकट का कारण नवउदारवाद की ही परस्थितियाँ हैं; न कि बाहरी घटनाओं की अपरिहार्य शृंखला। इसमें कोई संयोग नहीं है कि जिन देशों पर वायरस का सबसे बुरा प्रभाव पड़ा है, वे वही देश हैं जिनकी सरकारें नवउदारवादी परियोजना के साथ सबसे अधिक निकटता से जुड़ी हैं – ये वही देश हैं जिन्होंने WHO के सुझावों की अनदेखी की है। इसका सबसे नाटकीय उदाहरण ब्राजील है, जहाँ राष्ट्रपति जेयर बोलसोनारो के नेतृत्व वाली सरकार ने महामारी को कम करके आँका है और बिना किसी प्रतिबंध के आर्थिक गतिविधियों को जारी रखने के पक्ष में एक स्थायी अभियान भी चलाया है।

दूसरी ओर, उन देशों की सार्वजनिक स्वास्थ्य की स्थिति इतनी गंभीर नहीं है जहाँ प्रगतिशील सरकारों ने WHO के सुझावों का सम्मान किया है। उदाहरण के लिए, अर्जेंटीना में क्वारंटीन बढ़ाया जा रहा है और वहाँ की सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली को मजबूत किया जा रहा है, जिसके तहत राष्ट्रीय सार्वजनिक विज्ञान प्रणाली के माध्यम से परीक्षण किट्स विकसित किए जा रहे हैं। क्यूबा, जिसकी सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली अपनी गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध है, ने शारीरिक दूरी और सिलेक्टिव परीक्षण की नीतियाँ अपनाई हैं और सामुदायिक चिकित्सा का मॉडल लागू किया है। वेनेजुएला में प्रति निवासी संक्रमण और मौत की दर सबसे कम है; उस देश पर लागू वाणिज्यिक, वित्तीय और मीडिया नाकाबंदियों और उसके खिलाफ संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व में चल रहे बहुआयामी (हाइब्रिड) युद्ध के स्थायी खतरे के बावजूद। महामारी के बीच, बहुआयामी

युद्ध के कारण स्वास्थ्य संकट के साथ–साथ आर्थिक कठिनाइयाँ भी बढ़ सकती हैं, जिनका इस्तेमाल बाहरी हस्तक्षेप को सही ठहराने के लिए किया जा सकता है।

इस बीच, महामारी ने गहरी वैश्विक आर्थिक मंदी को तेज कर दिया है। वर्तमान संकट ने इस क्षेत्र में कठोर नवउदारवादी नीतियों के कारण पहले से काफी नीचे जा चुकी विकास दर और पिछले सात वर्षों से चल रही बेहद धीमी आर्थिक विकास दर को और कम कर दिया है। क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठन 1930 के बाद से क्षेत्र में सबसे खराब आर्थिक संकुचन का अनुमान लगा रहे हैं, 2020 में जीडीपी में 5.4 प्रतिशत की गिरावट आ सकती है। आर्थिक मंदी विशेष रूप से उन देशों और क्षेत्रों को प्रभावित करेगी जो, गैस और खनिजों के निर्यात पर निर्भर हैं (जहाँ प्राकृतिक संसाधनों की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों में गिरावट सबसे अधिक तीव्रता से असर कर रही है); या जो पर्यटन और प्रवासियों से आने वाली आय पर निर्भर हैं; जो वैश्विक वित्तीय पूँजी के प्रवाह से प्रभावित होती हैं (जैसे ब्राजील की अर्थव्यवस्था पूँजी के बहिर्गमन से सबसे अधिक प्रभावित हुई है); और जो वैश्विक वाणिज्य और वैश्विक उत्पादन शृंखलाओं में भागीदार हैं। मंदी और पूँजी के बहिर्गमन के अलावा, लोग अपने देश की करेन्सी के अवमूल्यन से, और कुछ देश भारी–भरकम बाहरी ऋण से भी प्रभावित हुए हैं।

अधिकांश आबादी को इस आर्थिक वास्तविकता के विनाशकारी परिणाम का सामना करना होगा। अंतर्राष्ट्रीय संगठन बेरोजगारी में भारी वृद्धि की चेतावनी दे रहे हैं; इकोनॉमिक कमिशन फोर द लैटिन अमेरिका एंड कैरेबियन (ECLAC) के अनुसार, 2020 में, 2019 में दर्ज की गई 8.1 प्रतिशत बेरोजगारी दर के ऊपर, बेरोजगारी में कम–से–कम 3.4 प्रतिशत की वृद्धि होगी; और बेरोजगारी दर 11.5 प्रतिशत तक पहुँच जाने की संभावना है। इसका मतलब है कि लगभग 377 लाख लोग या इससे भी अधिक बेरोजगार होंगे। ECLAC के अनुसार गरीबी का स्तर औसतन 4.4 प्रतिशत तक बढ़ने की संभावना है, जिससे 34.7 प्रतिशत आबादी प्रभावित होगी। गरीबी में ये वृद्धि इक्कीसवीं सदी के शुरुआती परिस्थितियों को हमारे सामने लाकर खड़ा कर देगा जब प्रगतिशील सरकारों की जीत की शुरुआत नहीं हुई थी। इसी तरह, संयुक्त राष्ट्र के वर्ल्ड फूड प्रोग्राम ने चेतावनी दी है कि लैटिन अमेरिका और कैरेबियन देशों में लगभग 140 लाख लोग इस साल भूख और खाद्य असुरक्षा से पीड़ित हो सकते हैं। नवउदारवादी ढाँचे में संचालित वर्तमान आर्थिक परिदृश्य, यह सूचित करता है कि महामारी का सामना करने के लिए संसाधनों को आवंटित किया गया है या नहीं, और

जहाँ आवंटन हुआ वहाँ कितने संसाधन आवंटित किए गए हैं। अधिकतर मामलों में, लोगों की सुरक्षा से पहले –'अर्थव्यवस्था की रक्षा करना' ही उद्देश्य है।

2019 के दौरान, नवउदारवादी सुधारों और क्षेत्रीय स्तर पर लगभग न के बराबर आर्थिक विकास से लैटिन अमेरिका में संघर्ष बढ़ा था और सरकारों की विश्वसनीयता में गिरावट आई थी। हालाँकि, सार्वजनिक स्वास्थ्य एमर्जेन्सी ने कई जगहों पर राष्ट्रपतियों के अधिकार को मजबूत किया है, लेकिन समय बीतने के साथ मौजूदा संकट की गंभीरता और नवउदारवादी नीतियों के दशकों के गहन प्रभाव ने नवउदारवाद की वैधता को साफ तौर पर उजागर कर दिया है।

बाजार में दुकानदार विसंक्रमित होने के लिए पैसे का भुगतान करते हैं। रॉड्रिग्ज मार्केट, ला पाज, बोलीविया,

2020। कार्लोस फेंगू

नवउदारवाद महामारी का उपयोग कर रहा है
भाग 1: बढ़ती तानाशाही

IMF ने 1929 में शुरू हुए ग्रेट डिप्रेशन की तर्ज पर महामारी के कारण आए वैश्विक आर्थिक संकट को ग्रेट लॉकडाउन के रूप में संदर्भित किया है। यह नाम न केवल दोनों आर्थिक स्थितियों और उनके प्रभावों व परिमाणों के बीच समानता को उजागर करता है, बल्कि इस महामारी को रोकने के लिए अपनाई जा रही प्रतिबंधात्मक सार्वजनिक स्वास्थ्य उपायों, खास तौर पर शारीरिक दूरी बनाए रखने के लिए लागू क्वारंटीन को ही मौजूदा आर्थिक संकट के कारण के रूप में प्रदर्शित भी करता है। पूँजीवाद के इतिहास में ये नया नहीं है –इसकी शुरुआत से लेकर आज तक– आर्थिक शक्तियाँ क्वारंटीन का विरोध करती रही हैं। जबकि महामारियों का फैलना लम्बे समय से व्यावसायिक चक्र, उसके परिवहन नेटवर्क और पूँजीवादी वैश्वीकरण की प्रक्रियाओं के साथ निकटता से जुड़ा रहा है।

इसके विपरीत, WHO द्वारा सुझाई गई आइसोलेशन और शारीरिक दूरी की नीतियों और महामारी के संकट से, स्वास्थ्य, सामाजिक और आर्थिक नीतियों के क्षेत्र में सरकारों को एक नयी भूमिका निर्वहन करने का मौका मिला है। नवउदारवादी नीतियों से उपजी गहरी असमानताओं में सरकारों की नयी भूमिका के बारे में गंभीर प्रश्न उठ रहे हैं। हालाँकि, ये जरूरी नहीं कि सरकारें अपनी नयी भूमिका आवश्यक रूप से नवउदारवादी व्यवस्था के विरोधाभास के रूप में निर्वहन करें; जैसा कि हम जानते ही हैं कि 2008 के वित्तीय संकट के दौरान, सरकारों ने बैंकों और निगमों को जमानत देने के लिए हस्तक्षेप किया था।

महामारी के संकट में जरूरी क्वारंटीन जैसी नीतियों और सरकारी हस्तक्षेप बढ़ाने के तर्क का उपयोग –विशेष रूप से इस क्षेत्र की नवउदारवादी सरकारों द्वारा– एक ऐसी राजनीति को मजबूत करने के लिए किया जा रहा है जो दमनकारी और सत्तावादी है। नवउदारवादी आक्रमण के दमनकारी और सत्तावादी तौर–तरीके पहले से ही कई देशों में बड़े पैमाने पर अपनाए जा रहे थे, क्योंकि नवउदारवादी मॉडल से आक्रोशित जनता द्वारा इस मॉडल और इसके अधिवक्ताओं का घेराव पिछले सालों में लगातार तेज हुआ है।

ऐसा मध्य अमेरिका के अधिकांश देशों में भी हुआ है। वहाँ, सामाजिक और स्वास्थ्य नीतियों की विरल उपस्थिति, कर्फ़्यू और आपातकाल की स्थिति, बढ़ते सैन्यकरण, और आइसोलेशन के नियमों को तोड़ने वालों के लिए (कई मामलों में मानवाधिकारों का उल्लंघन करते हुए भी) बढ़ती सजा के विपरीत खड़ी है; ऐसा विशेष रूप से ग्वाटेमाला, होंडुरास और एल साल्वाडोर में हो रहा है। इसी तरह से, कोलम्बिया में सामाजिक आंदोलनों और पूर्व गुरिल्ला नेताओं की हत्या की घटनाएँ महामारी के उभरने के बाद से बढ़ गई हैं। पेरू में, 2019 में अनुमोदित पुलिस सुरक्षा अधिनियम (बिल संख्या 31012), अब लागू कर दिया गया है; ये अधिनियम सुरक्षा बलों को दमन और क्रूरता करने के लिए पूरी छूट देता है। चिली में, महामारी के चलते देश के संविधान को सुधारने के लिए जनमत संग्रह रुक गया है, जिससे –कम–से–कम अभी के लिए– निरंतर विरोध प्रदर्शनों का सामना कर रही सरकार कुछ राहत की साँस ले रही है। अब सरकार जनमत संग्रह के आह्वान पर वापस लौटने की संभावना बढ़ाने के बजाये, सुरक्षा तंत्र को मजबूत करने के लिए नये उपकरणों की खरीद में जुटी है, सेना को वापस सड़कों पर उतार दिया गया है, कर्फ़्यू लगाया गया है और नये संदर्भ में शुरू हुए विरोध प्रदर्शनों को रोकने के लिए दमन का इस्तेमाल जारी है।

निश्चित रूप से, बढ़ती तानाशाही का सबसे बड़ा उदाहरण बोलीविया की स्थिति है, जहाँ नवंबर 2019 में एक तख्तापलट ने वैध राष्ट्रपति, एवो मोरालेस की सरकार को हटा दिया, चुनावी परिणामों को मानने से इनकार कर दिया, और बेनी डिपार्टमेंट की एक रूढ़िवादी सीनेटर, जीनिन आनेज के नेतृत्व में एक स्व–घोषित 'सरकार' स्थापित कर दी। आनेज की अगुवाई में चल रही वास्तविक सरकार –जिसने सकाबा और सेनकाटा में नरसंहारों और नवउदारवादी नीतियों की वापसी के साथ अपना काम शुरू किया– ने 3 मई को होने वाले चुनावों को महामारी के संदर्भ में स्थगित कर दियाय इस सरकार ने क्वारंटीन के तर्क का उपयोग अपने आलोचकों को परेशान करने, इंडीजिनस लोगों पर हमला करने और भ्रष्टाचार की अपनी नीतियों को गहरा करने के लिए किया है।

अन्य कदम उठाने के अलावा, मई में आनेज ने सर्वोच्च आदेश 4231 लागू कर दिया, जिसके अंतर्गत 'जनता के बीच आनिश्चितता' पैदा करने वाली लिखित, प्रिंट, या कलात्मक जानकारी प्रकाशित करने को दंडनीय अपराध माना जाएगा। यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सूचना के अधिकार का गंभीर उल्लंघन है। इसके

अलावा, सरकार भोजन, स्वास्थ्य सेवा, काम की माँगों को लेकर और स्थगित चुनाव बहाल करवाने के लिए हो रहे विरोध प्रदर्शनों पर दमन कर रही है।

बचे–खुचे लोकतंत्र पर लगातार बढ़ते खतरों का एक और उदाहरण मई में सामने आया, जब बोलिवियाई सशस्त्र बलों के कमांडर इन चीफ कार्लोस ओरेलाना के नेतृत्व में सैन्यकर्मियों का एक समूह (बिना किसी परिवर्तन के साथ) सशस्त्र बलों की पदोन्नति का प्रस्ताव पारित करवाने का अल्टिमेटम लेकर बहुराष्ट्रीय विधान सभा में पहुँच गया। ये प्रस्ताव स्व–घोषित राष्ट्रपति आनेज के द्वारा फरवरी में भेजा गया था। यह एक ऐसी सरकार की नये किस्म की तानाशाही है, जो लगातार भ्रष्टाचार घोटालों में फँसी रही है। अब सरकार ने एक बार फिर से चुनाव स्थगित करने का प्रयास किया है, शायद इसलिए क्योंकि (इवो मोरालेस की पार्टी) मूवमेंट फॉर सोशलिजम के उम्मीदवार लूइस अर्के पूर्व–चुनाव सर्वेक्षण में आगे चल रहे हैं। अब सितंबर में चुनाव कराने का प्रस्ताव रखा गया है।

इस क्षेत्र के अधिकांश हिस्सों में सेना की शक्ति में बढ़ौतरी हुई है। बोलीविया में, सेना की ताकत तख्तापलट के बाद से बढ़ी है। ब्राजील में, बोलसोनारो की सरकार में सेना की पर्याप्त उपस्थिति है। पूरे क्षेत्र के अधिकांश देशों में, सैन्य बलों को सुरक्षा तंत्र और सार्वजनिक स्थानों को नियंत्रित करने की इजाजत मिली हुई है, जो अब क्वारंटीन के बहाने जनता पर जोर–जबरदस्ती कर रहे हैं। तानाशाही और नवउदारवादी नीतियाँ लागू करने में अधिक–से–अधिक सेना का प्रयोग हो रहा हैय हर तरह की रणनीतियाँ अपनाई जा रही हैं जैसे कानून का इस्तेमाल (या न्यायिक युद्ध) और लोकतांत्रिक जीवन पर प्रतिबंध लगाना। कुल मिलाकर, इस क्षेत्र में एक नवफासीवादी रास्ता तैयार हो रहा है।

खाद्य सामग्री के वितरण के दौरान शारीरिक दूरी और व्यवस्था,
अल साल्वाडोर, 29 अप्रैल 2020।

कासा प्रेसिडेंशियल

/फोटोस पुब्लिसस

नवउदारवाद महामारी का उपयोग कर रहा है
भाग 2 : संरचनात्मक समायोजन की नीतियाँ

मध्य–अप्रैल में, स्पेन और लैटिन अमेरिका के दक्षिणपंथी राजनीतिज्ञों के एक समूह ने – लेखक मारियो वर्गास ललोसा, जो हाल के वर्षों में नवउदारवाद के प्रवक्ता बन गए हैं, के साथ मिलकर– एक घोषणा जारी की जिसका शीर्षक था 'The Pandemic Should Not Be a Prete•t for Authoritarianism.' इस घोषणा में, बढ़ते राज्य हस्तक्षेप, समाजवाद, और लोकप्रियतावाद (पॉप्युलिज़्म) पर आक्रोश जताते हुए 'कई सरकारों' पर 'बुनियादी स्वतंत्रता और अधिकारों को अनिश्चित काल तक प्रतिबंधित करने वाले कदम' उठाने का आरोप लगाया गया है। उनके लिए, हायेक और फ्रीडमैन की तरह, स्वतंत्रता का केवल व्यक्तिवादी अर्थ है, जो आर्थिक स्वतंत्रता की रक्षा से जुड़ा हुआ है। वे मुक्त बाजार पर लगाम लगने वाली किसी भी नीति को तानाशाही मानते हैं, भले ही वो नीति लोकतांत्रिक संस्थानों, सरकारों औरध्या जनता के द्वारा बनाई और स्थापित की गई हों। इसी फिलॉसोफी का उपयोग चिली में ऑगस्टो पिनोशे की तानाशाही (1973–1990) का समर्थन करने और उसे न्यायोचित ठहराने के लिए किया गया है। इसी तर्क के सहारे, ब्राजील के विदेश मामलों के मंत्री अर्नेस्टो अराजो ने WHO की नीतियों की आलोचना की और महामारी को 'कम्यूनावायरस' कहकर खारिज भी किया।

इन कोशिशों और नीतियों के साथ–साथ, इस क्षेत्र की कई नव–उदारवादी सरकारें महामारी का इस्तेमाल नवउदारवादी सामाजिक–आर्थिक सुधारों को –जिनमें से कई तो वायरस के आने से पहले से ही चल रहे थे– आगे बढ़ाने के लिए या पूँजीवादी ताकतों के लिए सहायता पैकेज बढ़ाने के लिए कर रही हैं। उदाहरण के लिए, पैराग्वे में, मारियो अब्दो की सरकार ने –राज्य के संरचनात्मक सुधार–की घोषणा की है, जिसका उद्देश्य है राज्य–तंत्र को कमजोर करना, सार्वजनिक व्यय को कम करना, सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों का निजीकरण करना और वेतन व पेंशन घटाना। कोलम्बिया में, इवान ड्यूक की सरकार ने आदेश को मंजूरी दे दी, जिसके तहत बैंकों और कम्पनियों को सब्सिडी देने के लिए देश में स्थानीय सरकारों के आर्थिक संसाधन ले लिए

जाएँगे। ड्यूक आर्थिक आपातकाल के कानून को मंजूरी दिलवाने में भी कामयाब हो गए, जिसके अंतर्गत सरकार को नवउदारवादी श्रम सुधार और पेंशन सुधार लागू करने का पूरा अधिकार होगा। हालाँकि, मंजूरी मिलने के बावजूद ड्यूक उपरोक्त आदेश या कानून अभी तक लागू नहीं कर पाए हैं। बोलीविया में तानाशाही सरकार, अर्थव्यवस्था को अनियंत्रित कर, नया बाहरी ऋण लेकर और ट्रांसजेनिक (जीन परिवर्तन) कृषि सुधार को मंजूरी देकर ईवो मोरालेस की सरकार की कामयाबियों को पूरी तरह से नष्ट करने का प्रयास कर रही है।

महामारी के दौरान लागू हो रही नवउदारवादी संरचनात्मक समायोजन नीति का एक और दुखद उदाहरण इक्वाडोर के राष्ट्रपति लेनिन मोरेनो के रूप में सामने है। महामारी की शुरुआत से ही, मोरेनो प्रशासन ने संरचनात्मक समायोजन की नीतियाँ जारी रखी हैं, वो नीतियाँ जो जनता द्वारा बड़े पैमाने पर किए गए विरोध के बावजूद 2019 की शुरुआत में IMF के साथ हुए समझौते का हिस्सा हैं। मार्च और अप्रैल 2020 के बीच, यानी महामारी के ठीक बीच में, मोरेनो प्रशासन ने IMF से एक नया ऋण लेने के लिए पहले के कर्ज की बड़ी रकम चुकाई। इन नये ऋणों का उपयोग करने के लिए, मोरेनो प्रशासन को पहले से कहीं ज़्यादा कड़ी नव–उदारवादी नीतियों का पालन करना पड़ेगा। इन सब के अलावा, मई 2020 में, मोरेनो सरकार दो बिलों के लिए संसदीय अनुमोदन प्राप्त करने में सफल रहीय COVID –19 के संकट से निपटने के लिए मानवीय समर्थन के लिए जैविक कानून और सार्वजनिक वित्त व्यवस्था के लिए जैविक कानून (Organic Law for Humanitarian Support to Combat the Crisis Derived from COVID&19 and Organic Law for the Ordering of Public Finance) संबंधी बिल। सार्वजनिक व्यवसायों और कार्यालयों को बंद या उनका निजीकरण कर, कम वेतन देने की सुविधा प्रदान कर, और श्रमिक वर्ग जिन अनिश्चित परिस्थितियों में जीता और काम करता है उन्हें और खराब करने के छूट देकर, ये दोनों बिल राज्य की संरचनात्मक समायोजन नीतियों को आगे बढ़ाते हैं। मोरेनो प्रशासन की सहमति में लागू हुए IMF के संरचनात्मक समायोजन पैकेज में विश्वविद्यालयों के बजट में पर्याप्त कटौती करना भी शामिल है, जिसका छात्र–छात्राओं ने भरपूर विरोध कियाय इसके परिणामस्वरूप सर्वोच्च न्यायालय ने विश्वविद्यालयों का बजट कम करने पर अस्थायी रूप से रोक लगा दी है। जनता और राजनीतिक विपक्ष इस बजट–कटौती के पैकेज के खिलाफ हैं, वहाँ एक ऐसी स्थिति बन गई है, जो एक नये संकट को जन्म दे सकती है।

भूमिहीन श्रमिक आन्दोलन (MST) की मुख्य गतिविधियाँ विभिन्न प्रारूपों के माध्यम से एकजुटता की ओर अग्रसर हैं – जैसे भोजन का वितरण: खाद्य टोकरियाँ, किसानों के बाजार और खाने के डिब्बे। पराना, ब्राजील, अप्रैल 2020।
MST

ब्राजील में अस्थिरता और राजनीतिक संकट

ब्राजील COVID–19 का क्षेत्रीय केंद्र बन गया है और वैश्विक स्तर पर भी महामारी के केंद्रों में से एक है। महामारी से निपटने के लिए पर्याप्त उपाय अपनाने में केंद्रीय सरकार की विफलता से एक भयावह स्थिति पैदा हो गई है जो अब मानवीय त्रासदी की ओर बढ़ रही है। केंद्रीय सरकार की निष्क्रियता के साथ ही राष्ट्रपति जायर बोलसोनारो का समस्या को कम करके आँकना या उसे पूरी तरह नकारना भी इसके लिए जिम्मेदार है, उनके लिए जिंदगियाँ बचाने से पहले अर्थव्यवस्था बचाना अहम विषय है। मुख्यत: परीक्षणों की कमी के कारण हो रहे मामलों की कम रिपोर्टिंग की वजह से, स्वास्थ्य संकट की सही जानकारी ही नहीं मिल रही है। इम्पीरियल कॉलेज ऑफ लंदन का अनुमान है कि जून के अंत तक COVID–19 के सक्रिय मामलों की कुल संख्या आधिकारिक आँकड़े (10 लाख 23 हजार सक्रिय मामलों) से कम–से–कम तीन गुना अधिक थी; जिसका मतलब है की देश में सक्रिय मामले लगभग 30 लाख 70 हजार हैं।

यह स्वास्थ्य संकट बोलसोनारो की सरकार के सामने खड़ी राजनीतिक और सामाजिक अस्थिरता का सबसे बड़ा कारण है, और इस अस्थिरता की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति भी है। इस सरकार ने पहले से जारी अपने राजनीतिक अलगाव की प्रवृत्ति को बढ़ाया है। बोलसोनारो ने विधायी और न्यायिक शक्तियों व राज्यपालों और मेयरों के साथ लड़ाई तेज की है, अपने पुराने सहयोगियों से रिश्ता तोड़कर उनपर अर्थव्यवस्था खोलने का दबाव डाला है (जैसा कि, रियो डी जनेरियो और साओ पाउलो के राज्यपालों के साथ किया गया)। इन सब के ऊपर से, बोलसोनारो की स्वास्थ्य नीति पर मतभेदों के कारण स्वास्थ्य मंत्री लुइज हेनरिक मैंडेटा ने इस्तीफा दे दिया –और फिर उनकी जगह पर आए नेल्सन टेइच ने भी इस्तीफा दे दिया। अपने रिश्तेदारों को जाँच प्रक्रियाओं से बचाने के लिए बोलसोनारो के द्वारा पुलिस में फेरबदल करने के प्रयास पर न्याय मंत्री सर्जीओ मोरो ने राष्ट्रपति की निंदा की और अपने पद से इस्तीफा दे दिया। इन सब कारणों से बोलसोनारो सरकार और अलग–थलग पड़ गई है। बतौर न्यायाधीश मोरो ने लावा जाटो नामक अदालती मामले को आगे बढ़ाने में एक प्रमुख निभाई थी, जिसके कारण पूर्व राष्ट्रपति लुइज इनासियो लुला दा सिल्वा कैद किए गए और 2018 के चुनावों से बाहर कर दिए गए थे। मोरो का इस्तीफा बोलसोनारो सरकार के घटते समर्थन को भी प्रदर्शित करता है, और इससे जनता के महत्वपूर्ण हिस्से – मध्यम वर्ग– में सरकार का समर्थन और कम होगा।

हालाँकि बोलसोनारो के पास अभी भी एक तबके का समर्थन है, जो मजबूती से उनके लिए सड़कों पर रैलियाँ करता है, कारवाँ निकालता है, कार्रवाईयाँ करता है, और डेरा डाले रहता है, लेकिन राष्ट्रपति अब निम्न–आय वाले लोगों के बीच अपना समर्थन कायम करना चाहते हैं। यह प्रयास मुख्यत: दो रूपों में सामने आता है: COVID–19 के उपचार के लिए क्लोरोक्वीन के उपयोग की अगुवाई करना और 'रोजगार' के बारे में चिंता करना। क्लोरोक्वीन के मामले में – वैज्ञानिक सबूतों के विपरीत – बोलसोनारो ये बात फैलाना चाहते हैं कि इस बीमारी का त्वरित समाधान उपलब्ध है। रोजगार के मामले में, उनका मानना है कि आर्थिक गतिविधियाँ 'सामान्य स्थिति' में लौट जानी चाहिए ताकि उन लोगों का समर्थन हासिल किया जा सके जो बेहद खराब परिस्थितियों में रहते हैं और जिनके वेतन कम हो रहे हैं या नौकरी ही हाथ से जा रही है। इसके अलावा, बोलसोनारो ने राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा बनाई और स्वीकृत आर्थिक सहायता का श्रेय लेने की कोशिश भी की है (हालाँकि, शुरुआत में उन्होंने इसका विरोध किया था और फिर सहायता पैकेज की मात्रा कम करने के प्रयास भी किए थे)।

बोलसोनारो सशस्त्र बलों से अधिक समर्थन हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं; सशस्त्र बलों के सदस्यों को सरकारी पदों पर नियुक्त किया गया है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण महामारी के बीच में दो पूर्व स्वास्थ्य मंत्रियों के इस्तीफे के बाद स्वास्थ्य मंत्रालय पर स्थापित हो चुके उनके पूर्ण नियंत्रण से मिलता है। स्वास्थ्य मंत्रालय के अंतरिम प्रमुख और 40 अन्य रणनीतिक पदों पर सैन्यकर्मी काबिज हैं, जो कि स्वास्थ्य क्षेत्र में काम करने के लिए पूरी तरह से प्रशिक्षित नहीं हैं। बोलसोनारो प्रशासन में सशस्त्र बलों के 2,800 से अधिक सदस्यों को राज्य के प्रशासनिक भूमिकाओं में नियुक्त किया है।

बोलसोनारो को राष्ट्रपति पद से हटाने के प्रयासों के बीच, बोलसोनारो प्रशासन ने उन दलों के विधायकों के साथ गठबंधन किया है जिनकी कोई वैचारिक प्रतिबद्धता नहीं है और जो पैसे के बदले अपने वोट बेच देते हैं। इसे centrão कहा जाता है। इन गठबंधनों में सैन्य नेता अग्रणी हैं, जो कि आम तौर पर इस तरह के गठबंधन के विरोधी रहे हैं, लेकिन जो अब इन गठबंधनों के बदले में सिविल सरकार में पदों की माँग कर रहे हैं (कुछ बोलसोनारो के मंत्रीमंडल में उच्च स्तर के पदों पर नियुक्त किए जा चुके हैं)।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि सरकार के कमजोर पड़ने का मतलब यह नहीं है कि बोलसोनारो बाहर कर दिए जाएँगे, लेकिन इससे समाज को राजनीतिक ताकतों के आपसी संबंध को स्पष्ट रूप से देखने का मौका मिलेगा। इस समय नव– फासिवाद जिसका प्रतिनिधित्व राष्ट्रपति कर रहे हैं और परंपरागत दक्षिणपंथ जिसका प्रतिनिधित्व अन्य संस्थान (जैसे कि संसद और कानूनी प्रणाली) और कुछ राज्य के राज्यपाल कर रहे हैं, उनके भीतर राजनीतिक मतभेद चल रहा है। इस संदर्भ में बोलसोनारो की चुनौती है, अभियोग से बचना और संसदीय गठबंधन व्यवस्थित करके रखना ताकि उनके लिए चौंबर ऑफ डिप्टीज और सीनेट प्रमुखों के समर्थन की गारंटी बनी रहे।

बोलसोनारो को हराने की कोशिशों ने अभूतपूर्व रूप से समाज के व्यापक क्षेत्रों में जागरूकता पैदा करने में अहम भूमिका निभाई है: वामपंथ में, (संसद, कानूनी व्यवस्था और खास तौर पर सर्वोच्च न्यायालय जैसे) संस्थानों में, बुद्धिजीवियों और सामाजिक हस्तियों में, नागरिक समूहों में, और –यहाँ तक कि दक्षिणपंथ का प्रतिनिधित्व करने वाले– राजनीतिक दलों में भी। हालाँकि, इस तरह के माहौल में वामपंथियों के मतभेद और चुनौतियाँ बढ़ जाते हैं, मसलन समाज के विविध क्षेत्रों के बीच बोलसोनारो पर दोषारोपण करने का बचाव करने के लिए सामरिक गठबंधन बनाना कठिन काम है। इससे वाम मोर्चे को आगे लाने में सामने आने वाली दिक्कतों का अंदाजा लगता है, ऐसा मोर्चा जो ब्राजील में जन–अभियान चलाने में सक्षम हो और जो मौजूदा संकट से बाहर निकलने के लिए पर्याप्त उपाय करने के लिए समाज में पहलकदमी कर सके।

ब्राजील में राजनीतिक संगठन और जन–आंदोलन इस संदर्भ में दो महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं। पहला काम है जीवन, स्वास्थ्य, आय और रोजगार की रक्षा के लिए पॉप्युलर एमर्जेन्सी प्लान चलाना। ये पहल हमारे समय की नवउदारवादी और नवफासिवादी परियोजना की निंदा करने के साथ, इस समझ पर आधारित है कि महामारी का सामना करने वाला सामाजिक आंदोलन गुणात्मक और कार्यक्रम आधारित सरकारी योजना से अलग नहीं किया जा सकता। लेकिन वर्तमान सरकार –जो कि निजी व्यावसायिक हितों द्वारा निर्देशित है और वैज्ञानिक सबूतों के खिलाफकाम करती है– ने संकट के खिलाफ लड़ाई में सरकारी कार्रवाई की संभावना को सीमित कर दिया है, इसलिए देश के सामने आने वाली चुनौतियों से पार पाना बेहद मुश्किल हो गया है।

ब्राजील में राजनीतिक संगठनों और जन–आंदोलनों की दूसरी पहल ब्राजील के वंचित समाजों में एकजुटता की राजनीति का निर्माण करना है, जो विविध उद्देश्यों पर काम करने वाले जन–आंदोलनों के एक मंच को समन्वित करने में मदद करेगा। विचारों की लड़ाई और जमीनी स्तर पर काम करने की एकजुटता के उसूलों पर आधारित इस प्रक्रिया का उद्देश्य एक समन्वित, पॉप्युलर प्रोजेक्ट के माध्यम से जन–संगठनों और उनके संघर्षों को मजबूत करना है। इस संदर्भ में एकजुटता का उद्देश्य, शारीरिक दूरी सहित क्वारंटीन हो पाने का अधिकार, एक सुनिश्चित वेतन का अधिकार, पानी, भोजन, और स्वास्थ्य जैसे अधिकारों के लिए संघर्ष के साथ जुड़ा हुआ है।

इन अधिकारों को जीतने और सार्वजनिक संसाधनों तक पहुँच हासिल करने के लिए उग्र संघर्ष की आवश्यकता है– और जन– संगठन ही इस प्रतिरोध को दिशा दे सकते हैं और जनता में उम्मीद जगा सकते हैं। महामारी के संदर्भ में जनता के अधिकारों की लड़ाई सभी स्तरों पर –स्थानीय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक– समन्वित तरीके से किए जाने की आवश्यकता है। या तो मजदूर वर्ग संगठित होकर अपने जीवन की लड़ाई लड़ेगा और एक राजनीतिक संघर्ष की तैयारी करेगा, या वो देश के पूँजीपति वर्ग के द्वारा देश को लुटता हुआ देखेगा और हजारों मजदूरों–गरीबों की दफन होती लाशों का गवाह बनेगा।

कोविड के समय में शतरंज। वेनेजुएला 2020।

Dikó / CacriPhotos

साम्राज्यवादी हस्तक्षेप की झलकियाँ

यह खतरनाक सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट अमेरिका को इस क्षेत्र में अपनी आक्रामक साम्राज्यवादी नीतियाँ जारी रखने से रोक नहीं पाया है। कई वर्षों से, मुख्यत: क्यूबा और वेनेजुएला अमेरिका के नेतृत्व में किए जा रहे बहुआयामी (हाइब्रिड) युद्ध के निशाने पर हैं, जिसका लक्ष्य है अमेरिका द्वारा 'पिछड़े' समझे जाने वाले इन इलाकों पर अमेरिकी वर्चस्व को मजबूत करना (बहुआयामी युद्ध पर अधिक जानकारी के लिए हमारा डॉसियर संख्या 17, वेनेजुएला एंड हाइब्रिड वॉर्ज इन लैटिन अमेरिका पढ़ें)। आज, हम अमेरिका और अन्य वैश्विक ताकतों, जैसे चीन और रूस के बीच बढ़ते विवाद को देख रहे हैं (बोरोन 2020)।

क्यूबा में, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा और तेज की गई वाशिंगटन की युद्ध नीति, राजनयिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में शत्रुतापूर्ण कार्य करने के साथ प्रतिबंधों को और कड़ा करने पर टिका है। इन सभी कार्रवाइयों के बीच, यह भी बताना जरूरी है कि अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने क्यूबा को उन देशों की सूची में फिर से शामिल कर लिया है जो –2019 में अमेरिकी आतंकवाद विरोधी प्रयासों में पूरी तरह से सहयोग नहीं कर रहे हैं'य और इसलिए 2020 'पहला वर्ष है जब क्यूबा को 2015 से पूरी तरह से सहयोग न करने के लिए प्रमाणित कर दिया गया है'। सार्वजनिक दुश्मनों के इस चयनित समूह में मई 2020 से ईरान, सीरिया, उत्तर कोरिया, वेनेजुएला और अब क्यूबा शामिल हैं जिन पर –अमेरिकी आतंकवाद विरोधी प्रयासों में पूरी तरह से सहयोग नहीं करने' का आरोप है।

संकट से उत्पन्न हुए विस्थापन और हताशा के बीच, संयुक्त राज्य सरकार ने महामारी का मुकाबला करने के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य उपायों में दुनिया भर के देशों के साथ मिलकर काम करने के लिए क्यूबा पर हमला करना ठीक समझा। अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने खुले तौर पर दुनिया के बाकी देशों पर दबाव बनाने का अभियान चलाया ताकि अन्य देश क्यूबा से मदद न माँगें। अमेरिका के मुख्यधारा की निजी मीडिया द्वारा दिखाई गई गलत खबरों के बावजूद, उनका प्रयास विफल रहा: सॉलिडैरिटी ब्रिगेड की अहम भूमिका सामने आई, और संकट के दौरान अलग–अलग देशों के हवाई अड्डों पर पहुँचने वाले सफेद कोटों और क्यूबा के झंडों की छवियाँ पूरी दुनिया में फैल गईं।

महामारी से पहले भी, क्यूबा के हेनरी रीव इंटरनेशनल मेडिकल ब्रिगेड के सदस्य हैती सहित चौबीस देशों में भेजे जा चुके थे। 1804 में यूरोपीय उपनिवेशवाद को उखाड़ फेंकने वाले पहले अमेरिकी देश, हैती की हाल के वर्षों में तख्तापलटों, विदेशी सैन्य कब्जे और उत्तरी गोलार्ध के गैर–लाभकारी संगठनों के बढ़ते मानवीय हस्तक्षेप के कारण साम्राज्यवादी शक्तियों पर निर्भरता बढ़ी है। नतीजतन, हैती –जहाँ नवउदारवादी युद्ध के सबसे हिंसक प्रयोग किए जा रहे हैं– क्यूबा का पूरक बन गया हैय उसकी संप्रभुता नष्ट कर दी गई है, जहाँ सामान्यत: गरीबी की स्थिति बनी हुई है और सार्वजनिक सेवाओं की कमी है और दमन बढ़ रहा है। हैती में, और अन्य देशों में भी, क्यूबा की एकजुटता ब्रिगेड का रवैया संयुक्त राज्य अमेरिका की आक्रामक नीतियों के ठीक विपरीत है, जो सैनिकों को तैनात कर अपने युद्धोन्मादी चरित्र को और मजबूत करना चाहता है।

वेनेजुएला के मामले में, संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा टकराव जारी रहा है। प्रत्येक नये टकराव के साथ, संयुक्त राज्य अमेरिका की घेराबंदी की साजिश साफ उजागर हो रही है। मई में नाकाम रही पेशेवर सैनिकों की घुसपैठ, 'ऑपरेशन गिदोन' उन हमलों के लम्बे सिलसिले में निर्णायक समय है जिसे अंतर्राष्ट्रीय मुख्यधारा की मीडिया के द्वारा नजरअंदाज किया गया या उचित ठहराया गया है। ये ऑपरेशन वेनेजुएला के विपक्ष के चरित्र को बताता है: जो कि पूरी तरह से साम्राज्यवाद के लिए समर्पित है। एक पहलू जो साफ नजर आता है वो ये है कि ये ऑपरेशन औपचारिक रूप से वाशिंगटन की कठपुतली जुआन गुएदो को जॉर्डन गूड्रो से जोड़ने वाले एक कॉनट्रैक्ट के सहारे किया गया थाय जॉर्डन गूड्रो पेशेवर सैनिकों की एक कम्पनी सिल्वरकॉर्प के प्रमुख हैं और अमेरिकी सशस्त्र बलों के पूर्व सदस्य रह चुके हैं, और जिन्होंने हाल में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के एक अभियान कार्यक्रम में सुरक्षा का जिम्मा संभाला था। इस ऑपरेशन से सैन्य हस्तक्षेपों की (वास्तविक या जाली) आउटसोर्सिंग का उदाहरण मिलता है; इस तरह की आउटसोर्सिंग को अमेरिका ने खाड़ी युद्ध के बाद से बढ़ावा दिया है (इस पर और अधिक जानकारी के लिए हमारे कोरोनाशॉक अध्ययन संख्या 2: कोरोनाशॉक और वेनेजुएला के खिलाफ बहुआयामी युद्ध को पढ़ें)।

इवान ड्यूक (पूर्व राष्ट्रपति ऐल्वारो युरिब के शिष्य और एक कट्टर यूरिबिस्टा) के नेतृत्व में आज के कोलम्बियाई राज्य की वेनेजुएला सरकार के खिलाफ घेराबंदी में एक विशेष भूमिका है। सार्वजनिक रूप से, कोलम्बिया लीमा ग्रूप के प्रमुख ताकतों में से एक हैय लीमा ग्रूप वो राजनयिक मंच है जो कथित तौर पर वेनेजुएला के

लोगों की भलाई के लिए पूरे महाद्वीप की दक्षिणपंथी सरकारों को एक मंच पर साथ लाता है। और अधिक स्पष्टता के लिए हमें जानना चाहिए कि कोलम्बिया, अपने देश में वेनेजुएला पर हमला करने के लिए तैनात अर्धसैनिक प्रशिक्षण शिविर चलाने की अनुमति देता है।

ये सब होने के साथ–साथ, कोलम्बिया में राजनीतिक हिंसा का चक्रव्यूह चल रहा है, जिसके निशाने पर सामाजिक आंदोलनों के नेता हैं। पुलिस और सैन्य मशीनरी बिना रुके मिथ्या लांछन लगा रही है, जिसमें जानी–मानी हस्तियों –यहाँ तक कि अपनी ही सरकार के लोगों की– जासूसी करना भी शामिल है। संयुक्त राज्य अमेरिका के कोलम्बिया में नौ सैन्य–अड्डे हैं, और कई अड्डे कैरिबियन देशों में हैंय इनमें से कुछ उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के अड्डे हैं। दक्षिणी कमांड (SOUTHCOM) द्वारा संचालित इस हस्तक्षेप का एक पहलू सेना द्वारा फैलाया जाने वाला झूठा प्रचार भी है। उदाहरण के लिए, अमेरिकी अटॉर्नी जनरल द्वारा निकोलस मदुरो और अन्य शाविस्टा नेताओं पर नार्को–ट्रैफिकिंग के आरोप लगाने और उन्हें मार डालने पर इनाम देने की घोषणा के बाद, पहले से गुप्त ढंग से काम कर रहे नौसेना के ठिकाने अवैध ड्रग्स ले जाने वाली नौकाओं को रोकने के बहाने स्थापित कर दिए गए।

कैरिबियन सागर में तैनात दक्षिणी कमांड के जहाजों का बेड़ा उस समय खबरों में आया जब अमेरिका ने यह बताया कि इसका इस्तेमाल वेनेजुएला जाने वाले ईरानी तेल टैंकरों को रोकने के लिए किया जा सकता है। इसके बावजूद, अमेरिकी टैंकरों की नाकाबंदी को तोड़ते हुए ईरानी तेल टैंकर वेनेजुएला पहुँचे। कैरिबियन सागर में ईरानी टैंकरों पर पहरा देते हुए राष्ट्रीय बोलिवेरियन सशस्त्र बल के सुखोई विमानों की तस्वीर अमेरिकी शक्ति के बिखरने का प्रतीक है। इससे ट्रम्प प्रशासन की धमकियों के खोखलेपन का अंदाजा लगाया जा सकता है, जिन्हें बीते महीनों में कई विफलताओं का सामना करना पड़ा है। हालाँकि, सैन्य खतरा बना हुआ है और इसे कम करके नहीं देखा जाना चाहिए।

यह उल्लेखनीय है कि अमेरिकी सरकार ऐसे समय में टकराव बढ़ा रही है जब देश में मौतों की संख्या आसमान छू रही है (जून के अंत में मृतकों की संख्या 1,20,000 से अधिक तक पहुँच गई है, जो कि दुनिया में सबसे ज्यादा है)। इस वास्तविकता से इस कदर अराजकता फैली है कि अमेरिका की चिकनी–चुपड़ी प्रचार मशीनरी न तो महामारी का असर छिपा पाने में सफल रही और न ही ट्रम्प प्रशासन का दोष छिपा पाने में।

संकट के प्रति अमेरिकी नजरिया, अन्य देशों, जैसे कि चीन में हुई राजनीतिक कार्रवाई के ठीक उलट है, जहाँ महामारी से लड़ने की तीव्र और व्यापक प्रतिक्रिया हुई। अमेरिका के दक्षिण में नब्बे मील की दूरी पर स्थित एक छोटा–सा विद्रोही द्वीप –क्यूबा– अमेरिका के व्यापार प्रतिबंधों के बावजूद महामारी का मुकाबला करने में सक्षम रहा है, इसके साथ ही ये अपनी चिकित्सा एकजुटता ब्रिगेड के साथ दुनिया भर के अन्य देशों के लोगों की भी सहायता कर रहा है। इस बीच, अमेरिका की एकपक्षीयता रिकॉर्ड स्तर पर पहुँच गई है, जो अमेरिका की WHO के साथ लड़ाई से साफ जाहिर होता है। ऐसा लगता है कि महामारी ने वैश्विक वर्चस्व के परिवर्तन को तेज कर दिया है (मेरिनो 2020)।

इन सबके ऊपर से, अमेरिका में संरचनात्मक नस्लवाद और पुलिस हिंसा के खिलाफ लोग फिर से सड़कों पर उतर आए हैं। जॉर्ज फ्लॉयड, ब्रेओंना टेलर और अन्य लगों की हत्या पर लोगों की प्रतिक्रिया अमेरिकी लोगों में उठ रहे तनाव के स्तर की ओर संकेत करता है, जो कि पूरे संयुक्त राज्य अमेरिका में फैल रहा हैय ये विद्रोह अमेरिका के शक्तिशाली साम्राज्य होने की छवि को छिन्न–भिन्न कर रहे हैं।

गरीब बस्तियों में सामुदायिक रसोईयाँ भूख की समस्या हल कर रही हैं। विला सेलिना, ब्यूनस आयर्स प्रांत, अर्जेंटीना, 2020।
Nazareno Roviello / Union of Workers of the Popular Economy (UTEP)

जन–आंदोलन और भविष्य की चुनौतियाँ

अक्टूबर 2019 में, नवउदारवादी आक्रमण के खिलाफ पूरे लैटिन अमेरिका में संघर्ष की नयी लहर चल पड़ी थी। लेकिन कुछ ही महीनों में, महामारी से उत्पन्न चुनौतियों और उसके कारण उत्पन्न अवरोधों के चलते इस क्षेत्र में जन–आंदोलनों को अपनी माँगों और काम करने के तरीकों को बदलना पड़ा; हर आंदोलन ने अपने तरीके से बदलाव किए। संघर्ष करने की स्थितियाँ बदलने का मतलब ये नहीं है कि संघर्ष ठप हो गए, बल्कि संघर्ष करने के नये तरीके अपनाए गए हैं। ट्विटर स्टॉर्म और वर्चूअल मीटिंग के रूप में सोशल मीडिया के माध्यम से संगठित होने के नये रूप सामने आए हैं; कैसेरोलाजोस, ने COVID – 19 के युग में नया रूप इख्तियार किया है, बालकनियों और खिड़कियों से विरोध में बर्तन बजाए जा रहे हैंय सड़क पर प्रदर्शनकारियों ने सामाजिक दूरी का पालन करते हुए मास्क पहनकर प्रदर्शन किएय और अब हाल ही में सड़कों और राजमार्गों को फिर से जाम करना शुरू कर दिया गया है। गरीब और मजदूर वर्ग के सामने मुँह बाए खड़ी बिगड़ती स्वास्थ्य, सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों के संदर्भ में जनता के विरोध करने के ये नये रूप अधिक–से–अधिक प्रभावी हो रहे हैं।

महामारी के प्रभाव का इस्तेमाल पूँजीवादी एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए किया जा रहा है। श्रमिकों को काम से हटाया जा रहा है; वेतन में कटौती की जा रही है; विशेष रूप से निजी और अनौपचारिक क्षेत्रों में काम की परिस्थितियों की अनिश्चितता बढ़ी है (जैसे कि 'uberisation' लगातार अनिश्चित हो रहा है); और काम के डिजिटलाइजेशन –जिसे पूँजीपतियों ने वायरस के उद्भव से पहले ही बढ़ावा देना शुरू कर दिया था– में उल्लेखनीय तेजी आई है। इस चुनौतीपूर्ण वास्तविकता का सामना करते हुए, इस क्षेत्र के श्रमिकों ने विभिन्न तरीकों से अपनी प्रतिक्रिया जाहिर की है। डिलीवरी वर्कर्स और अन्य आवश्यक क्षेत्रों के श्रमिकों ने क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर हड़तालें की हैं। इस क्षेत्र के स्वास्थ्य कर्मचारियों के संघर्ष और उनकी माँगों पर विशेष ध्यान देना बेहद जरूरी है (इस पर और अधिक जानकारी के लिए हमारे डोसियर संख्या 29, स्वास्थ्य एक राजनीतिक विकल्प है पढ़ें)।

अनिश्चित या अनियमित कार्य वाले क्षेत्रों में स्थिति और भी बदतर है; उनमें काम करने वालों के लिए पर्याप्त रूप से जीवन यापन करना मुश्किल है। सामाजिक नीतियों की अनुपस्थिति का विनाशकारी प्रभाव पड़ा है,

जिसके कारण भूखमरी और बीमारियाँ बढ़ी हैं (वैश्विक स्तर पर इसके बारे में और अधिक जानकारी के लिए, हमार बीसवाँ न्यूजलेटर (2020), भूख से तबाह होती दुनिया पढ़ें)। इस संदर्भ में, जन–आंदोलनों ने बहुत कठिन परिस्थितियों में भी बहादुरी से काम किया है, कैंटीनों का आयोजन कियाय सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक खाद्य सामग्री और बुनियादी वस्तुएँ उपलब्ध कराईंय सामूहिक संगठनों में अपना योगदान दियाय और समय–समय पर सरकारों से प्रभावी समाधान की माँग की। इन प्रयासों के बीच, ये बात उल्लेखनीय है कि चौपर (बोलीविया) में गरीब बस्तियों में भोजन वितरण करने वाले संगठनों को तानाशाह सरकार परेशान करती रही। ब्राजील में, भूमिहीन श्रमिक आंदोलन (MST) और अन्य जन–आंदोलनों के द्वारा 1,200 टन से भी अधिक भोजन देश भर के शहरों की छोटी बस्तियों में पहुँचाया गया। अर्जेंटीना में, पॉप्युलर इकॉनोमी से जुड़े संगठनों ने भी ऐसे प्रयास किए; उन्होंने भोजन मुहैय्या करवाने के साथ–साथ सरकार से इस तरह के उपाय करने की माँग भी की, जिनसे तेजी से फैल रहे वायरस से पीड़ित गरीब बस्तियों को हर जरूरी मदद मिल सके।

ग्वाटेमाला, अल साल्वाडोर और इक्वाडोर में, महिलाएँ राजमार्गों के किनारे सफेद झंडे टाँग रही हैं और लोग अपने घरों से सफेद झंडे लहरा रहे हैं, जो भूख की त्रासदी और भोजन की माँग का प्रतीक हैं। पनामा में, गरीबों ने सड़कें जाम कर दी हैं और वे बर्तन पीटकर अपना विरोध जाता रहे हैं। सैंटियागो, चिली में, विरोध और चक्का–जाम करने वाले गरीब बस्तियों के निवासीयों पर वही सरकार दमन कर रही है जो उन्हें टुकड़ों पर जिंदा रखती हैं। एल ऑल्टो, ला पाज और बोलीविया के अन्य हिस्सों में, श्रमिक और गरीब, रोजगार और भोजन न मिलने के खिलाफ विरोध कर रहे हैं। इसी तरह के अनुभव बोगोटा (कोलम्बिया) और इस क्षेत्र के अन्य बड़े शहरी केंद्रों से भी सामने आ रहे हैं। इक्वाडोर में नवउदारवादी एजेंडे की अस्वीकृतिय बोलिविया की गलियों में पटाखे फोड़कर और बर्तन पीटकर चुनावों की माँग करते लोगय और ब्राजील में फोरा बोलसोनारो! (बोलसोनारो बाहर जाओ!) के नारों के साथ प्रतिरोध में बर्तन बजाना महामारी से उत्पन्न हुई नयी परिस्थितियों में नयी ऊर्जा से मजबूत होते जन–आंदोलनों की झलकियाँ हैं।

गरीब बस्तियों में फैलता वायरस सामाजिक और स्वास्थ्य संबंधी त्रासदी का डर पैदा करता है। यह वास्तविकता शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि कोलंबिया के अमेजन संभागों (देश के सबसे गरीब क्षेत्रों में से एक) से लेकर हैती तक पूरे लैटिन अमेरिका के आंदोलनों ने इस पर चिंता व्यक्त की है। मूल.

निवासियों के संगठनों ने भी, उनके समुदायों पर मँडरा रही इस भयावह परिस्थिति की निंदा की है; पैन अमेरिकी स्वास्थ्य संगठन (PAHO) के अनुसार मई के अंत तक, अमेजन बेसिन में संक्रमण के कम–से–कम 20,000 मामले आ चुके थे।

महामारी ने महिलाओं और LGBTQI। कम्यूनिटी पर होने वाले अन्याय, हिंसा और उनके दोहरे शोषण को उजागर किया है। सबसे ज्यादा असर गरीब महिलाओं पर पड़ा है; उनकी आय रुक गई है, उनपर घर और परिवार के लोगों की देखभाल की जिम्मेदारी है और उनके खिलाफ हिंसा बढ़ी है, जिसका अनुमान बढ़ते नारीसंहार से लगाया जा सकता है। चिली में, कोऑर्डिनेडोरा फेमिनिस्टा 8 एम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है; इस संगठन ने वहाँ की जनता और परिवारों के लिए सामूहिक रूप से नारीवादी देखभाल सुविधाएँ आयोजित करने का नेतृत्व किया; परिवारों में महिलाओं पर होने वाली हिंसा को उजागर कर इसे खत्म करने और महिलाओं, बच्चों, किशोरों की सुरक्षा की आवश्यकता पर तत्काल ध्यान देने की माँग कीय और महामारी में घर से बाहर न जाने के अधिकार की माँग की, और न्यूनतम आय की गारंटी व अन्य आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाओं की गारंटी की माँग उठाई।

नारीवादी महिला आंदोलनों और नारीवादी समझ रखने वाले अन्य आंदोलनों ने इस बात को जोरदार और स्पष्ट रूप से उठाया है कि मानव जीवन की देखभाल करना मुनाफा कमाने से ज्यादा सर्वोपरि है। अंतर्राष्ट्रीय पीपुल्स असेंबली ने दुनिया के लोगों से जीवन की रक्षा करने का उद्देश्य पूँजी के हितों से पहले रखने और पूँजीवादी ढाँचे के भीतर लगातार उभरते स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था के बीच के विरोधाभास से बाहर निकलने का आह्वान किया है। लैटिन अमेरिका में ALB। आंदोलनों के मंच ने दुनिया के लोगों से नवउदारवादी सरकारों की निंदा करने, प्रतिबंधों पर रोक लगाने, और साम्राज्यवादी आक्रामकता को अस्वीकार करने का आह्वान किया है। इस समूह ने जमीनी स्तर से एक राजनीतिक कार्यक्रम और परियोजना शुरू करने का आह्वान किया है। पूरी दुनिया में फैल चुकी वायरस–जनित–महामारी ने न केवल नवउदारवाद के कारण बढ़ती सामाजिक पीड़ाओं को उजागर किया है; बल्कि इसने पूँजीवादी वैश्वीकरण के प्रभावों को भी स्पष्ट कर दिया है और मौजूदा वैश्विक व्यवस्था के विकल्प पर बहस छेड़ दी है। लोगों के प्रतिरोध में विकल्प की आवश्यकता दिखाई देती है, ऐसा विकल्प जो अंतर्राष्ट्रीयतावाद के नये रूपों को उभारे और उसे मजबूत करे।

MST ने पराना, ब्राजील के अंदरूनी इलाकों में पचास टन भोजन दान का आयोजन किया, अप्रैल 2020।

वेलिंगटन लेनन

/ MST

अतीत और वर्तमान

लैटिन अमेरिका में महामारी के विस्तार से, सार्वजनिक स्वास्थ्य की प्रणाली की अनिश्चितता और गरीबों के जीवन की बदतर परिस्थितियाँ उजागर हुई हैं –जो कि दशकों से अपनाई जा रही नवउदारवादी नीतियों का ही परिणाम हैं। हमने इस बात को दर्शाया है कि ये नीतियाँ वायरस के प्रभाव को रोकने में विफल रही हैं। मौजूदा संकट की स्थिति में, सबसे ज़्यादा सुनाई पड़ने वाला तर्क ये है कि, अतीत की 'सामान्य स्थिति' फिर से स्थापित करना बेहद जरूरी है। हालाँकि, जैसा कि हमने दिखाया है, अतीत में वे सभी आर्थिक, सामाजिक, पलायन, पर्यावरण और जलवायु के संकट, जो कि नवउदारवाद से ही उत्पन्न हुए हैं, सामान्य परिस्थिति की तरह पेश किए गए थे। भविष्य, अतीत में लौटना नहीं हो सकता। इस संकट से पूरी तरह बाहर निकलने के लिए इस संकट के असल कारणों को जड़ से मिटाना जरूरी है।

संदर्भ के लिए देखें:

ठoron] Atilio- ^Notas sobre el imperialismo y la estrategia de seguridad de los Estados Unidos* [^Notes on the current affairs of imperialism and on US new national security strategy*]- Las venas del Sur siguen abiertas- Debates sobre el imperialismo de nuestro tiempo [The Veins of the South Are Still Open: Debates around the imperialism of our time*]] edited by López] Emiliano] LeftWord] 2020-

Katz] Claudio- ^Confluencia del virus en América Latina* [^The Confluence of the Virus in Latin America*]- Tricontinental: Institute for Social Research] 14 May 2020- https://www-thetricontinental-org/es/ba&research/katz&confluencia/ Merino] Gabriel- ^

La reconfiguración imperial de Estados Unidos y las fisuras internas frente al ascenso de China* [^The Imperial Reconfiguration of the United States Against the Rise of China*]- Las venas del Sur siguen abiertas- Debates sobre el imperialismo de nuestro tiempo- [The Veins of the South Are Still Open: Debates around the imperialism of our time*]] edited by López] Emiliano] LeftWord] 2020-

आम, केले और एवोकाडो। काराकास, वेनेज़ुएला, 2020।

Dikó / CacriPhotos

tricontinental

Tricontinental: Institute for Social Research
is an international, movement-driven institution focused on stimulating intellectual debate that serves people's aspirations.
www.thetricontinental.org

Instituto Tricontinental de Investigación Social es una institución promovida por los movimientos, dedicada a estimular el debate intelectual al servicio de las aspiraciones del pueblo.
www.eltricontinental.org

Instituto Tricontinental de Pesquisa Social
é uma instituição internacional, organizado por movimentos, com foco em estimular o debate intelectual para o serviço das aspirações do povo.
www.otricontinental.org